रहित सीमांत भूमि को अतिरिक्त नहीं प्राप्त होता है। इससे स्पष्ट है कि लगान विभिन्न श्रेणी की भूमि की उर्वरा शक्ति में भिन्नता के कारण उत्पन्न होता है। रिकार्डो के अनुसार, 'पूर्व सीमांत भूमियों से प्राप्त उपज की कीमत तथा उत्पादन की लागत का अन्तर ही रिकार्डो का लगान है।' (the difference between price and cost of production on intra marginal land is the Ricardian rent.)

एक रेखाचित्र के द्वारा भी इसे दिखाया जा सकता है—

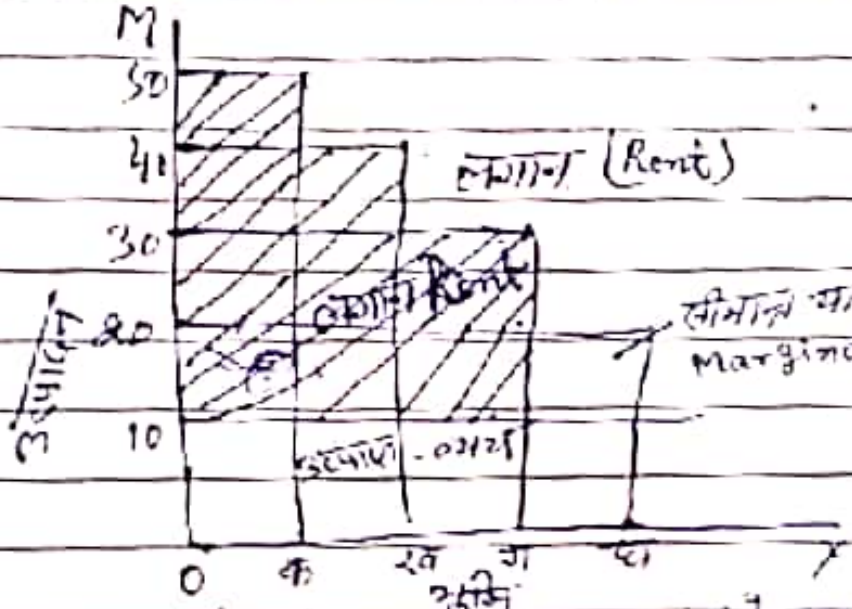

OX रेखा पर भूमि की इकाइयों तथा OY पर रेखा पर इनसे प्राप्त उपज को दिखाया गया है। चित्र का छायादार क्षेत्र लगान को दिखाता है। नीचे का छायादार क्षेत्र उत्पादन व्यय को। चित्र से स्पष्ट है कि घ श्रेणी की भूमि से प्राप्त उपज ठीक उसके उत्पादन व्यय के बराबर होती है। अतएव उस भूमि से कोई लगान नहीं प्राप्त होता है। अतः इसे no rent land या सीमांत भूमि marginal land भी कहते हैं। घ की अपेक्षा ग श्रेणी की भूमि से 10 क्विंटल उपज अधिक होती है तथा ख श्रेणी की भूमि से 30 क्विंटल अधिक उपज होती है तथा क श्रेणी की भूमि से 30 क्विंटल अधिक उपज होती है। लगान 30 और लगान क्रमशः इसी प्रकार से हुए।

~~Lecture No 40~~

B.A Degree I Economics Hons.
Paper 1st
Dated-28.5.2020.

Dr. R.N. Tiwari
Deptt of Economics.
A.N.D.C Shahpur Patory.

Scanned with CamScanner

Page No.
Date

इस प्रकार कम उपजाऊ भूमि की अपेक्षा अधिक उपजाऊ भूमि में मिलनी अधिक उपज होती है, अर्थशास्त्र में इसे लगान कहते हैं।

रिकार्डो ने इसे अधिक स्पष्ट बनाने के लिए एक निर्जन टापू का उदाहरण दिया है। मान लिया जाय कि एक निर्जन टापू पर व्यक्तियों का जत्था जाकर बसता है और कृषि का कार्य प्रारम्भ करता है। चूंकि टापू पर पर्याप्त मात्रा में भूमि उपलब्ध है, अतः यह जत्था सबसे पहले अच्छी भूमि पर खेती का कार्य प्रारम्भ करता है जिसे प्रथम श्रेणी की भूमि कहा जायेगा। प्रथम श्रेणी का एक हेक्टर भूमि पर 100 रु का श्रम एवं पूँजी खर्च करने से कुल उपज 40 क्विंटल होती है व्यक्तियों का दूसरा ग्रुप टापू पर पहुँचता जिस कारण अन्न की माँग बढ़ जाती है अतएव यह ग्रुप द्वितीय श्रेणी की भूमि पर खेती प्रारम्भ करता है दूसरा ग्रुप भी एक हेक्टर भूमि पर 100 रु श्रम एवं पूँजी खर्च करने से 30 क्विंटल उपज होती है किन्तु इतनी उपज से काम नहीं चलता अतः तीसरी श्रेणी की भूमि पर खेती प्रारम्भ की जाती है तीसरी श्रेणी की एक हेक्टर भूमि पर 100 रु का श्रम लगाने से कुल उपज 20 ~~क्विं~~ क्विंटल होती है। धीरे-धीरे जनसंख्या और अधिक बढ़ती है तो निम्न श्रेणी की भूमि पर कृषि का कार्य प्रारम्भ किया जाता है। इस प्रकार की भूमि, अर्थात चौथी श्रेणी की एक हेक्टर भूमि पर 100 रु की श्रम एवं पूँजी लगाने से उपज 10 क्विंटल होती है।

इस प्रकार चार ~~किस्म~~ श्रेणी की भूमि पर खेती की जाती है इन चार प्रकार की श्रेणी पर श्रम एवं पूँजी की समान इकाइयाँ खर्च करने पर भी उत्पादन में अन्तर होता है चौथी श्रेणी की भूमि पर 100 रु व्यय करने पर उत्पादन केवल 10 क्विंटल होता है। अतः उपज का मूल्य चौथी श्रेणी के भूमि के उत्पादन व्यय के अनुसार अर्थात 10 रु प्रति क्विंटल ही निर्धारित होता है यदि इससे कम

मूल्य कम होगा कि इस श्रेणी की भूमि के उत्पादकों के लिए होगा जिससे वे उत्पादन करना ही बन्द कर देंगे। अतः चौथी श्रेणी की भूमि सीमांत भूमि (marginal land) है। चौथी श्रेणी की अपेक्षा प्रथम तीन श्रेणियों की भूमि से अधिक मात्रा में उपज प्राप्त होती है। उपज का यही अन्तर रिकार्डो का लगान सिद्धान्त कहलाता है। रिकार्डो के अनुसार लगान की उत्पत्ति विस्तृत कृषि तथा गहन कृषि दोनों दशाओं के अन्तर्गत हो सकती है।

विस्तृत कृषि के अन्तर्गत लगान को निम्न उदाहरण द्वारा अधिक स्पष्ट किया गया है —

भूमि की श्रेणी	प्र. श्रेणी की भूमि	द्वि. श्रेणी की भूमि	तृ. श्रेणी की भूमि	च. श्रेणी की भूमि सीमांत भूमि
कुल उत्पादन गेहूँ का	40 क्विंटल	30 क्विंटल	20 क्विंटल	10 क्विंटल
लगान (उपज के रूप में)	(40-10) = 30 क्विंटल	(30-10) = 20 क्विं.	(20-10) = 10 क्विं.	10-10=0 अतः लगान रहित भूमि marginal land
कुल लागत श्रम एवं पूँजी	100 रु.	100 रु.	100 रु.	100 रु.
बाजार मूल्य सीमांत भूमि की लागत के बराबर होगा	10 रु. प्रति क्विं.	10 रु. प्रति क्विंटल	10 रु. प्रति क्विंटल	100/10 = 10 रु. प्रति क्विंटल
लगान मुद्रा के रूप में	(40×10) रु. − 100 रु. = 300 रु.	(30×10) रु. − 100 रु. = 200 रु.	(20×10) रु. − 100 रु. = 100 रु.	(10×10) रु. − 100 रु. = शून्य अतः लगान रहित भूमि marginal land

उपरोक्त तालिका में लगान को पहले उत्पत्ति के रूप में तथा बाद में लगान मुद्रा के रूप में दिखलाया गया है। उदाहरण से स्पष्ट है कि चौथी श्रेणी की भूमि पर कोई लगान नहीं मिलता अतः इसे सीमांत भूमि या लगान रहित भूमि भी कहते हैं। रिकार्डो के अनुसार सीमांत तथा लगान रहित भूमि में कोई लगान नहीं प्राप्त होता। इसका कारण यह है

Lecture No - 40

B.A. Deg I Economics Honours

Paper 1st.

Dr. R.N. Tiwari
Deptt of Economics.
A.N.D. College Shahpur Patory.

Date 28.5.2020

Name of Topic - रिकार्डो का लगान सिद्धान्त (Ricardian theory of Rent)

लगान संबंधी सिद्धान्त का प्रतिपादन सुप्रसिद्ध ब्रिटिश अर्थशास्त्री रिकार्डो ने सर्वप्रथम किया था रिकार्डो के लगान सिद्धान्त को ... रिकार्डो के अनुसार, 'लगान भूमि का वह भाग है जो भूस्वामी को भूमि की मौलिक एवं अविनाशी शक्तियों के प्रयोग के बदले में दिया जाता है।' Rent is that portion of the produce of the earth which is paid to the landlord for the use of the original and indestructible power of the soil. (Ricardo) मौलिक एवं अविनाशी शक्तियों से रिकार्डो का तात्पर्य भूमि की उन शक्तियों से है जिनके कारण भूमि के उत्पादन में भिन्नता होती है। फलस्वरूप भिन्न-भिन्न टुकड़ों के उत्पादन में भिन्नता होती है। इस प्रकार उर्वरता के दृष्टिकोण से भूमि को भिन्न-भिन्न श्रेणियों में बाँटा जाता है। रिकार्डो के अनुसार आर्थिक लगान का कारण भूमि के उत्पादन में यह भिन्नता ही है। दूसरे शब्दों में अन्तर्सीमांत और निकृष्टतम भूमि की उपज में अन्तर ही आर्थिक लगान है। रिकार्डो के अनुसार सभी भूमि एक प्रकार की नहीं होती है। उनके अनुसार प्राचीन समय में जब जनसंख्या कम थी तब तक प्रत्येक व्यक्ति अपनी इच्छानुसार भूमि को काम में लाता था। इस स्थिति में किसी को भी लगान नहीं देना पड़ता था। भूमि अतिरिक्त मात्रा में उपलब्ध होने के कारण लोग पहले सबसे अच्छी भूमि पर ही खेती की शुरुआत करते थे। परन्तु धीरे-धीरे जनसंख्या में वृद्धि होती गयी। अधिक मात्रा में अन्न की आवश्यकता होने लगी अतः किसान अब कम उपजाऊ भूमि पर ही खेती का कार्य प्रारंभ करने लगे। इन दोनों प्रकार की भूमि पर पूँजी एवं श्रम के समान इकाइयों का प्रयोग करने पर भी कम उपजाऊ भूमि की उपज अधिक उपजाऊ भूमि कि अपेक्षा कम होती है

Scanned with CamScanner